Vol 6 Issue 11 August 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: http://oldror.lbp.world/

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

REVIEW OF RESEARCH

इतिहास की दृष्टि में जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के शासन काल में मलिक ताजुद्दीन – मदिरा पानोत्सव शड़यंत्र (1291ई.)

डॉ. नीरज कुमार गौड
प्राचार्य , एच. के. एल. कालेज ऑफ ऐजूकेषन , गुरू हर सहाय , फिरोजपुर (पंजाब)।

सारांश :

जलालुद्दीन खिलजी का शासन उदारता एवं भाग्यवादिता पर आधारित था। दिल्ली का वह प्रथम सुल्तान था जिसकी आन्तरिक नीति दूसरों को प्रसन्न करने के सिद्धांत पर थी। शायद 70 वर्ष की अवस्था में सुल्तान बनने के कारण वह अपने विद्रोहियों को कठोर दण्ड़ देने के पक्षघर नही था। मलिक छज्जू के विद्रोहों को क्षमा प्रदान कर उसने अपने विद्रोहियों को नव विद्रोह की प्रेरणा दी जिसका फल मदिरा पानीत्सव षणयंत्र के रूप में सामने आया फिर भी उसके षणयन्त्र कारियों दृारा उसका प्रशार्स्तगान करने पर उन्हें नाम मात्रेण दण्ड़ देकर क्षमा करने से उसके द्वारा आगामी विद्रोहों की रूपरेखा प्रशस्त कर दी गयी।

प्रस्तावना .

बहुत से तुर्की कर्मचारी तथा अमीर जब शाम को एक स्थान पर बैठते तथा मदिरापान करते तो वह सल्तान जलालुद्दीन खिलजी के विषय में अनादरपूर्वक शब्द कहा करते और यहाँ तक बढ़ जाते कि शक्ति दृारा उसे पद्च्युत करने का प्रस्ताव रखते। मदिरा के प्रभाव के कारण यह अनुभवहीन तथा कृतध्न अमीर बहुत सी महफिलों में सुल्तान की हत्या करा देने की योजना भी बनाया करते थे। इस नशे की हालत में उनके मुँह में जो कुछ भी आता वह कह डालते। सुल्तान को इन पानोत्सवों तथा नशे की हालत में कही गयी बातों की खबर भी लग जाती तो वह शान्त रहता तथा कहा करता कि इस प्रकार की अनावयक एवं व्यर्थ बातें नशे की हालत में कही गयीं हैं। इस समय इन अमीरों को नशे की हालत में न तो अपना होश है और ना ही भगवान का भय, इसलिये इनसे कुछ भी कहना व्यर्थ है। उसने तो सूचना देने वालों से यहाँ तक कह दिया कि मदिरापान की बैठकों की इस प्रकार की बातें मुझ तक न पहुँचायीं जायें।[1] इस प्रकार सुल्लतान जलालुद्दीन खिलजी ने सूचना देने वालों की बातों की उपेक्षा कर दी तथा उन पर गम्भीरता से विचार नही किया।

तुर्की कर्मचारियों का जिनके वंशज शिहाबुद्दीन गौरी के समय से शासन कर रहे थे। उनका सुल्लतान की नम्रता से लाभ उठाना स्वाभाविक ही था उन्होंने खिलजी क्रान्ति द्वारा छीने हुये पद और शक्ति के एकाधिकार की पुन : स्थापना के लिये षड़यंत्र रचना प्रारम्भ कर दिया। यह मदिरा एवं पानोत्सव की बैठकों में रचे जाते इन षड़यंत्रों के कारण निम्नवत् दृष्टिगोचर होते हैं–

- सुल्तान की उदारता ने मलिकों तथा सामंतो को साहसी बना दिया था क्योंकि मलिक छज्जू के विद्रोह करने पर उसे उसके साथियों सहित मुक्त कर दिया था।
- उस समय चोर, डाकू और लुटेरे भी दण्ड़ से बच जाते थे सुल्तान इन अपराधियों से पश्चाताप की शपथ लेकर अपने को सन्तुष्ट कर लेता तथा उन्हें मुक्त कर देता।
- जलालुद्दीन के शान्त एवं उदार स्वभाव की परिस्थितियाँ एवं उक्त कारणों से प्रभावित होकर मलिक एवं अमीर अनर्गल बातें किया करते थे।

उस समय मलिक ताजुद्दीन कूची बहुत पैसे वाला प्रतिष्ठित अमीर था और एक बड़ी अक्ता (जागीर) का स्वामी था। यह सुल्तान के साथ उठने बैठने वालों तथा उसको परामर्श देने वालों में प्रमुख था। उस समय शहर की प्रतिष्ठित और उच्च वर्गीय जनता इससे मिलना अपने लिये बहुत गर्व का विषय समझती थी यह भी अपनी सरदारी एवं बड़प्पन के लिए प्रसिद्ध था।[2]

मलिक ताजुद्दीन कूची के घर अक्सर मदिरा एवं पानोत्सव आजोजित हुआ करते थे इस प्रकार की एक गोष्ठी में बहुत से अमीर (इल्तुतमिश का चहलगानी अमीर) आमंत्रित थे। इस समय सुल्तान मन्दावर – रणथम्भौर अभियान (1291 ई0) पर गया था।[3] इस गोष्ठी में अमीरों की निरंकुश भावनायें प्यालों में उत्तेजित हो गयीं। सुरा के मद में अर्द्ध चेतन सामन्तों को शिष्टता का कुछ भी ध्यान न रहा उन उपस्थित सामन्तों में से एक ने कहा कि केवल अहमद चप को छोड़ कर अन्य सभी खिलजी लोग बहुत ही निकम्में और मक्कार हैं। कम से कम "जलालुद्दीन" तो सुल्तान पद के योग्य ही नही है। इससे अधिक योग्य तो ताजुद्दीन कूची है। इस प्रकार वहाँ उपस्थित सभी अमीरों ने मलिक ताजुद्दीन कूची को "बादशाह" से सम्बोधित किया तथा सभी ने उस की बैयत कर ली।[4] उसमें से एक शेखी मारने वाले ने तो यहाँ तक कहा कि वह सुल्तान जलालुद्दीन का सर खरबूजे की तरह काट सकता है। इसी के सामने दूसरा भी बिना सोचे कह बैठा कि ***"मै सुल्तान की एक कटार द्वारा हत्या कर सकता हूँ"*** तदुपरान्त मलिक ताजुद्दीन कूची को सिंहासन पर बैठा दूँगा।[5]

इस प्रकार मलिक ताजुद्दीन कूची के यहाँ हुई महफिल की समस्त बातें तथा अमीरों के नाम जलालुद्दीन के पास पहुँच गये। सुल्तान जो कि मदिरापान बैठकों में हुए वाद – विवाद एवं द्रोह पूर्ण निन्दाओं के लिये इन अमीरों तथा मलिकों की तरफ ध्यान नही देता था। इस बार हुई गम्भीर बातों एवं विद्रोहपूर्ण षडयंत्र को जानकर, जलालुद्दीन अत्यंत क्रोधित हुआ क्योकि इस बार वह अपनी सीमा से आगे बढ़ गये थे। उसने सभी अमीरों को बुलाकर एक स्थान पर खड़ा किया और उनसे कठोर वचन कहना प्रारम्भ किया। उत्तेजित होकर उसने तलवार निकाली और उनके सामने फेंककर कहा, ***"यह तलवार पड़ी है तुममें से जो कोई पुरूषत्व या साहस का दावा करता हो इसे उठाये और मुझसे लड़े जबकि मैं यहाँ बिना शस्त्र और कवच के बैठा हूँ।"*** सुल्तान जलालुद्दीन का यह वचन सुनकर अमीरों ने अपने – अपने मस्तक झुका लिये परन्तु स्थिति और तनाव में मधुरवासी नुसरतसुवाह सरदावतदार (जो स्वयं भी ताजुद्दीन कूची के यहाँ होने वाली गोष्ठी में शामिल था तथा इसने भी मूर्खतापूर्ण शब्द कहे थे) ने सुल्तान का क्रोध शान्त करने में सफलता प्राप्त की। चतुर नुसरतसुवाह सरदावतदार ने मूर्ख बकवादियों के क्षमा याचना की तथा उसने कहा " शंहशाह स्वयं भली प्रकार जानते हैं कि पियक्कड़ मूर्खतापूर्व बातें बकतें हैं, यदि हम आप जैसे सुल्तान की हत्या करें, जो कि हमारा अपने पुत्रों के भाँति पालन – पोषण करता है तो हम कभी भी आप जैसा दूसरा शासक न पा सकेंगे, और यदि इसके विपरीत आप हमें अपनी मूर्खता एवं मद्यपान के कारण मृत्युदण्ड देतें हैं तो पुन : आपको ऐसे निष्कपट शुभकाँक्षी नहीं मिलेंगे।[6]

यह वार्तालाप जलालुद्दीन के शराब के प्यालों और आँसू बहाते हुये नुसरत सुहाव सरदावतदार के मुँह से काव्यपाठ समाप्त करने जैसा प्रतीत हुआ। चतुर मलिक सरदावतदार की प्रेम भरी बातों से सुल्तान की आखों से आँसू आ गये। उसने मृत्युदण्ड पाने वाले बकवादियों को क्षमा प्रदान करते हुये अपनी – अपनी जागीरों में अलग – अलग रूप से रहने की आज्ञा दी और एक वर्ष तक देहली आने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।[7] जलालुद्दीन ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा कि अगर वह उसे पुनः क्रोधित करने का प्रयास करेंगें तो उनको अर्कली खाँ के सुपर्द कर दिया जायेगा जो उस समय अपने कठोर दण्ड़ विधान के लिये विख्यात था।[8]

इस प्रकार से जलालुद्दीन ने षडयंत्रपूर्ण वार्तालाप के साबित होने पर भी उदारता का परिचय देते हुए उनमें सें कुछ को नाममांत्रेण दण्ड़ देकर, शेष सभी को क्षमा प्रदान कर दी। जिससे आगे आने वाले समय में विद्रोहों को अत्यधिक बढ़ावा मिला।

सन्दर्भ

1.तारीखे फिरोजशाही – जियाउद्दीन बरनी, पृ. 192.
2.दिल्ली सल्तनत – मौ. हबीब एवं खलिक अहमद निजामी पृ. 278
3.तारीखे फिरोजशाही – जियाउद्दीन बरनी, पृ. 203 – 204
4.वही, पृ. 190.
5.वही पृ. 191.
6.वही, पृ. 192
7.वही पृ. 192.
8.वही पृ. 193.

सन्दर्भ ग्रर्थ सूची

1.तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, अनुवाद ——— डॉ. सैयद अतहर अब्बास रिजवी।
2.फुतूहस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल मलिक इसामी, अनु. आग मेंहदी हूसैन, आगरा 1938.
3.तारीखे मुबारकशाही : याहिया, हिन्दी, अनु. के.के. बसु।
4.मिफ्ताहुल फुतूह : अमीर खुसरा, सम्पादित एस.ए. रशीद अलीगढ़।
5.दिल्ली सल्तनत : मौ. हबीब एवं खलीक अहमद निजामी।
6.जलाुद्दीन फिरोज खिलजी : शेख अब्दुर्रशदि।
7.आदि तुर्क कालीन भारत : सौ.अ.अ. रिजवी।

डॉ. नीरज कुमार गौड
प्राचार्य , एच. के. एल. कालेज ऑफ ऐजूकेषन , गुरू हर सहाय ,फिरोजपुर (पंजाब)।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,
We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : http://oldror.lbp.world/